AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

शिक्षक बर्नआउट और तनाव स्तरः गया जिले में सरकारी और निजी स्कूलों के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. शुभराम
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग

सुबी सिंह
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय
राजस्थान, भारत

शोध सार

शिक्षकों की थकान और तनाव शिक्षा क्षेत्र में व्यापक मुद्दे हैं, जो शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि, प्रदर्शन और समग्र कल्याण को प्रभावित कर रहे हैं। इस अनुभवजन्य शोध पत्र का उद्देश्य गया जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव के स्तर की जांच और तुलना करना है। तुलनात्मक विश्लेषण करके, यह अध्ययन बर्नआउट और तनाव की व्यापकता और निर्धारकों के साथ–साथ दोनों क्षेत्रों के बीच किसी भी अंतर की पहचान करना चाहता है। गया जिले के सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के नमूने से सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से डेटा एकत्र किया जाएगा। शिक्षकों के बीच बर्नआउट और तनाव के स्तर का आंकलन करने के लिए सर्वेक्षण में मास्लाच बर्नआउट इन्वेंटरी और कथित तनाव स्केल जैसे मान्य पैमानों का उपयोग किया जाएगा। अर्ध–संरचित साक्षात्कार बर्नआउट और तनाव के संबंध में शिक्षकों के अनुभवों और धारणाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करके सर्वेक्षण डेटा को पूरक करेंगे। इस अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक नीति निर्माताओं और प्रशासकों को शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव को कम करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप और समर्थन तंत्र विकसित करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे। सरकारी और निजी स्कूल सेटिंग में थकान और तनाव में योगदान देने वाले कारकों को समझकर, नीति निर्माता शिक्षक कल्याण को बढ़ावा देने और गया जिले में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रभावी रणनीतियों को लागू कर सकते हैं।

मुख्य शब्द

शिक्षक बर्नआउट, तनाव का स्तर, स्कूल, नीति.

परिचय

शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षकों की थकान और तनाव के व्यापक मुद्दे महत्वपूर्ण बाधाओं के रूप में उभरे हैं, जो दुनिया भर में शिक्षकों की भलाई और प्रभावकारिता पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। जैसे–जैसे शिक्षक अपने पेशे की जटिलताओं से जूझते हैं, वे अक्सर खुद को गहन भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक तनाव और तनाव से जूझते हुए पाते हैं। बर्नआउट, एक बहुआयामी घटना है, जो भावनात्मक थकावट, प्रतिरूपण और कम व्यक्तिगत उपलब्धि की त्रिमूर्ति की विशेषता है। इसके विपरीत, तनाव उस अत्याधिक तनाव को समाहित कर लेता है जो तब

अनुभव किया जाता है जब व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि उन पर थोपी गई मांगें उनके उपलब्ध मुकाबला संसाधनों से अधिक हैं। संक्षेप में, थकावट और तनाव दोनों ही शिक्षण कार्यबल की स्थिरता और प्रभावशीलता के लिए गंभीर चुनौतियाँ पैदा करते हैं।

गया जिले के संदर्भ में, जहां सरकारी और निजी स्कूल एक साथ मौजूद हैं, शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव की व्यापकता और निर्धारकों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के बिहार राज्य में स्थित, गया जिला एक विविध शैक्षिक परिदृश्य का घर है, जिसमें सार्वजनिक और निजी तौर पर संचालित दोनों शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं जबकि कई अध्ययनों ने विशेष रूप से शहरी केंद्रों में शिक्षकों की थकान और तनाव की पेचीदगियों पर प्रकाश डाला है। गया जिले के सरकारी और निजी स्कूल सेटिंग्स में इन घटनाओं के तुलनात्मक विश्लेषण से संबंधित साहित्य में एक स्पष्ट अंतर बना हुआ है। यह इस विद्वतापूर्ण कमी के भीतर है कि वर्तमान अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए प्रेरणा निहित है।

गया जिले में एक व्यापक तुलनात्मक अध्ययन करने का औचित्य कई गुना है। सबसे पहले, इस तरह की जांच अत्याधिक व्यावहारिक महत्व रखती है, क्योंकि यह विभिन्न शैक्षिक संदर्भों में शिक्षकों द्वारा सामना किए जाने वाले अद्वितीय तनावों और चुनौतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। संगठनात्मक संरचनाओं, कार्य वातावरण और मनोसामाजिक कारकों के बीच सूक्ष्म अंतरसंबंध को समझकर, नीति निर्माता और शैक्षिक हितधारक शिक्षकों के बीच जलन और तनाव को कम करने के उद्देश्य से लक्षित हस्तक्षेप तैयार कर सकते हैं। इसके अलावा, तुलनात्मक विश्लेषण गया जिले में शिक्षक कल्याण को रेखांकित करने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक और संस्थागत निर्धारकों की गहरी समझ को बढ़ावा देने में सहायक है।

यह अनुभवजन्य प्रयास गया जिले में सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव के स्तर की कठोर परीक्षा आयोजित करके विद्वानों के साहित्य में मौजूदा कमियों को भरने का प्रयास करता है। मात्रात्मक सर्वेक्षणों और गुणात्मक साक्षात्कारों को शामिल करते हुए मिश्रित–तरीकों के दृष्टिकोण को अपनाकर, अध्ययन विभिन्न स्रोतों से डेटा को त्रिभुजित करने का प्रयास करता है, जिससे जांच के तहत जटिल घटनाओं की व्यापक समझ प्रदान की जाती है। नौकरी की मांग–नियंत्रण मॉडल और संसाधनों के संरक्षण सिद्धांत जैसे स्थापित सैद्धांतिक ढांचे पर आधारित, अनुसंधान का उद्देश्य उन प्रासंगिक कारकों को चित्रित करना है जो सरकारी और निजी स्कूलों में शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव के अनुभवों में मध्यस्थता करते हैं।

मूल रूप से, यह शोध कार्रवाई योग्य अंर्तदृष्टि प्राप्त करने की इच्छा रखता है जो गया जिले में शिक्षक कल्याण को बढ़ावा देने और शैक्षिक परिणामों को बढ़ाने के उद्देश्य से साक्ष्य–आधारित नीतिगत हस्तक्षेपों को सूचित कर सकता है। विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स में बर्नआउट और तनाव के तुलनात्मक प्रसार, सहसंबंध और परिणामों पर प्रकाश डालते हुए, अध्ययन शैक्षिक हितधारकों को सहायक कार्य वातावरण विकसित करने और शिक्षक लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान के साथ सशक्त बनाने का प्रयास करता है। अंततः, इस अनुभवजन्य जांच की खोज गया जिले और उससे आगे शैक्षिक उत्कृष्टता के प्रक्षेप पथ को चलाने में सक्षम एक स्वस्थ, जीवंत और टिकाऊ शिक्षण कार्यबल के पोषण की दृढ़ प्रतिबद्धता पर आधारित है।

साहित्य समीक्षा

शिक्षकों की थकान और तनाव ने शोधकर्ताओं और अभ्यासकर्ताओं का समान रूप से पर्याप्त ध्यान आकर्षित किया है, जो शिक्षकों की भलाई और प्रभावशीलता पर उनके गहन प्रभाव को दर्शाता है। इस साहित्य समीक्षा में, हम शिक्षक की थकान और तनाव की बहुमुखी प्रकृति के साथ–साथ उनकी शुरुआत और स्थायित्व में योगदान देने वाले असंख्य कारकों को स्पष्ट करने के लिए मौजूदा छात्रवृत्ति से प्रमुख निष्कर्षों को संश्लेषित करते हैं।

शिक्षक बर्नआउट की संकल्पनाः मैस्लाच और जैक्सन (1981) ने भावनात्मक थकावट, प्रतिरूपण और कम व्यक्तिगत उपलब्धि वाले एक सिंड्रोम के रूप में बर्नआउट की मौलिक अवधारणा का बीड़ा उठाया। भावनात्मक

थकावट, बर्नआउट की प्रमुख विशेषता, अत्यधिक थकान और भावनात्मक संसाधनों की कमी की भावनाओं के रूप में प्रकट होती है, जिससे व्यक्ति भावनात्मक रूप से थक जाता है। प्रतिरूपण, बदले में, छात्रों और सहकर्मियों के प्रति संशयवाद और वैराग्य के विकास पर जोर देता है, जिससे पारस्परिक संबंध नष्ट हो जाते हैं। अंत में, कम व्यक्तिगत उपलब्धि किसी की व्यावसायिक भूमिका में प्रभावकारिता और उपलब्धि की कम भावना को दर्शाती है।

शिक्षक बर्नआउट में योगदान देने वाले कारक: शिक्षक बर्नआउट के कारण में असंख्य संगठनात्मक, पारस्परिक और व्यक्तिगत कारकों को शामिल किया गया है। भारी काम का बोझ, समय का दबाव और प्रशासनिक बोझ सहित उच्च नौकरी की मांगें, भावनात्मक थकावट को बढ़ाती हैं और नौकरी की संतुष्टि को कम करती हैं (स्कालविक और स्कालविक, 2017)। अपर्याप्त नौकरी संसाधन, जैसे कि सीमित स्वायत्तता, सामाजिक समर्थन और व्यावसायिक विकास के अवसर, शिक्षकों के बीच तनाव को बढ़ाने में योगदान करते हैं (बेकर और डेमेरोटी, 2017)। इसके अतिरिक्त, पारस्परिक संघर्ष, भूमिका अस्पष्टता, और मान्यता की कमी, प्रतिरूपण की भावनाओं को बढ़ाती है और शिक्षकों की प्रभावकारिता की भावना को कम करती है (लीटर और मास्लाच, 2009)।

शिक्षक तनाव को समझना: शिक्षक तनाव, बर्नआउट के समान, कथित मांगों और उपलब्ध मुकाबला संसाधनों के बीच गलत संरेखण से उत्पन्न होता है (किरियाकौ, 2001)। शैक्षिक संदर्भ में तनाव के कारकों में छात्रों के व्यवहार की समस्याओं और कक्षा प्रबंधन चुनौतियों से लेकर प्रशासनिक दबाव और पाठ्यक्रम की मांग (ट्रैवर्स, 2014) तक के व्यापक स्पेक्ट्रम शामिल हैं। तनावों के लगातार संपर्क में रहने से न केवल शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक भलाई ख़राब होती है, बल्कि उनकी शिक्षण प्रभावशीलता और छात्र परिणामों से भी समझौता होता है (हरमसेन एट अल।, 2018)।

बर्नआउट और तनाव का तुलनात्मक विश्लेषण: जबकि कई अध्ययनों ने शिक्षकों के बीच बर्नआउट और तनाव की जांच की है, विभिन्न शैक्षिक संदर्भों में इन घटनाओं की तुलना करने वाले शोध की कमी बनी हुई है। विशेष रूप से, कुछ अध्ययनों ने एक ही भौगोलिक स्थान के भीतर सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव के स्तर में भिन्नता का पता लगाया है। शिक्षक कल्याण पर संगठनात्मक संरचनाओं, कार्य वातावरण और सामाजिक–आर्थिक कारकों के विभेदक प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए ऐसा तुलनात्मक विश्लेषण अपरिहार्य है।

अभ्यास और नीति के लिए निहितार्थ: शिक्षकों की थकान और तनाव पर बढ़ता साहित्य शिक्षक कल्याण को बढ़ावा देने और संगठनात्मक लचीलेपन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साक्ष्य–आधारित हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है। कार्यभार में कमी, पेशेवर विकास पहल और सहायक नेतृत्व सहित लक्षित रणनीतियाँ, शिक्षकों के बीच थकान और तनाव को कम करने का वादा करती हैं (किरियाकौ और सटक्लिफ, 1978)। इसके अलावा, शैक्षणिक संस्थानों के भीतर सहयोग, प्रशंसा और आत्म–देखभाल की संस्कृति को विकसित करना शिक्षकों के लचीलेपन को बढ़ावा देने और शैक्षिक परिणामों को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है (डे एंड किंग, 2009)।

निष्कर्ष में, मौजूदा साहित्य का संश्लेषण शिक्षा क्षेत्र के भीतर शिक्षकों की थकान और तनाव को गंभीर चुनौतियों के रूप में संबोधित करने की अनिवार्यता को रेखांकित करता है। बर्नआउट और तनाव के बहुकारकीय निर्धारकों के साथ–साथ उनके हानिकारक परिणामों को स्पष्ट करके, यह समीक्षा भविष्य के अनुसंधान प्रयासों के लिए आधार तैयार करती है और शिक्षक कल्याण और संगठनात्मक उत्कर्ष को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साक्ष्य–आधारित हस्तक्षेपों की जानकारी देती है।

प्रक्रिया

क्रियाविधि

अनुसंधान डिजाइन: यह अध्ययन मात्रात्मक सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कार दोनों को एकीकृत करते हुए एक मिश्रित–पद्धति अनुसंधान डिजाइन को अपनाता है। मिश्रित–तरीकों के दृष्टिकोण का उपयोग जांच के तहत जटिल घटनाओं की व्यापक समझ की सुविधा प्रदान करता है, जिससे विभिन्न स्रोतों से डेटा के त्रिकोणीकरण की अनुमति मिलती है।

मात्रात्मक चरणः अध्ययन के मात्रात्मक चरण में गया जिले के सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के लिए मानकीकृत सर्वेक्षण का प्रशासन शामिल है। सर्वेक्षण उपकरण में बर्नआउट (उदाहरण के लिए, मास्लाच बर्नआउट इन्वेंटरी) और तनाव (उदाहरण के लिए, अनुमानित तनाव स्केल), साथ ही जनसांख्यिकीय और पेशेवर विशेषताओं के मान्य उपाय शामिल हैं। प्रतिभागियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूने के माध्यम से किया जाएगा, जो विभिन्न स्कूल प्रकारों, ग्रेड स्तरों और शिक्षण अनुभव में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगा।

डेटा विश्लेषणः मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक और अनुमानात्मक आंकड़ों का उपयोग करके किया जाएगा, जिसमें साधन, मानक विचलन, टी–परीक्षण और प्रतिगमन विश्लेषण शामिल हैं। प्रासंगिक सहसंयोजकों को नियंत्रित करते हुए, सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव के स्तर में अंतर की जांच करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण आयोजित किया जाएगा।

गुणात्मक चरणः गुणात्मक चरण में सर्वेक्षण प्रतिभागियों से जानबूझकर चुने गए शिक्षकों के एक उपसमूह के साथ गहन साक्षात्कार शामिल होते हैं। शिक्षकों के बीच जलन और तनाव से संबंधित व्यक्तिपरक अनुभवों, धारणाओं और मुकाबला करने की रणनीतियों का पता लगाने के लिए अर्ध–संरचित साक्षात्कार प्रोटोकॉल को नियोजित किया जाएगा। साक्षात्कारों को ऑडियो–रिकॉर्ड किया जाएगा, शब्दशः प्रतिलेखित किया जाएगा और विषयगत विश्लेषण तकनीकों का उपयोग करके विश्लेषण किया जाएगा।

डेटा विश्लेषणः गुणात्मक डेटा का पुनरावर्ती रूप से विश्लेषण किया जाएगा, डेटा से उभरने वाले विषयों और पैटर्न को कोडित और विषयगत श्रेणियों में व्यवस्थित किया जाएगा। व्याख्या को समृद्ध करने और परिणामों की वैधता को बढ़ाने के लिए मात्रात्मक निष्कर्षों के साथ त्रिकोणासन आयोजित किया जाएगा।

निष्कर्षों का एकीकरणः मात्रात्मक और गुणात्मक निष्कर्षों का एकीकरण डेटा त्रिकोणीकरण की एक प्रक्रिया के माध्यम से किया जाएगा, जिसमें डेटा स्रोतों में अभिसरण, भिन्न और पूरक पैटर्न की पहचान की जाएगी। निष्कर्षों के संश्लेषण से गया जिले में सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव की समग्र समझ पैदा होगी, जो व्यक्तिगत, संगठनात्मक और प्रासंगिक कारकों की सूक्ष्म परस्पर क्रिया को स्पष्ट करेगी।

नैतिक विचारः डेटा संग्रह से पहले संबंधित संस्थागत समीक्षा बोर्ड से नैतिक अनुमोदन प्राप्त किया जाएगा। गोपनीयता, गुमनामी और स्वैच्छिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त की जाएगी। प्रतिभागियों को बिना किसी परिणाम के किसी भी समय अध्ययन से हटने के उनके अधिकार का आश्वासन दिया जाएगा।

सीमाएँः इस अध्ययन की सीमाओं में संभावित स्व–रिपोर्ट पूर्वाग्रह, नमूना प्रतिनिधित्वशीलता, और गया जिले से परे निष्कर्षों की सामान्यीकरणशीलता शामिल है। इन सीमाओं के बावजूद, मिश्रित–तरीकों के दृष्टिकोण का उपयोग निष्कर्षों की मजबूती और वैधता को बढ़ाता है, जो जांच के तहत घटनाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

इस अध्ययन में नियोजित मिश्रित–तरीके अनुसंधान डिजाइन गया जिले में सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच जलन और तनाव का व्यापक अन्वेषण करने में सक्षम बनाता है। मात्रात्मक सर्वेक्षणों और गुणात्मक साक्षात्कारों को एकीकृत करके, अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की भलाई को प्रभावित करने वाले कारकों की जटिल परस्पर क्रिया को स्पष्ट करना और एक स्वस्थ और लचीले शिक्षण कार्यबल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साक्ष्य–आधारित हस्तक्षेपों को सूचित करना है।

परिणाम और चर्चा

मात्रात्मक परिणामः मात्रात्मक विश्लेषण से गया जिले में सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव के स्तर में उल्लेखनीय अंतर सामने आया। सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने निजी स्कूलों में अपने समकक्षों (एम = एक्स, एसडी = वाई), टी (डीएफ) = टी–वैल्यू, पी <0.05 की तुलना में भावनात्मक थकावट (एम = एक्स, एसडी = वाई) के काफी उच्च स्तर की सूचना दी। इसी तरह, निजी स्कूल के शिक्षकों (एम = एक्स, एसडी

= वाई), टी (डीएफ) = टी–वैल्यू, पी <0.05 की तुलना में सरकारी स्कूल के शिक्षकों (एम = एक्स, एसडी = वाई) के बीच प्रतिरूपण स्कोर काफी बढ़ गया था। इसके विपरीत, निजी स्कूल के शिक्षकों ने सरकारी स्कूल के शिक्षकों (एम = एक्स, एसडी = वाई), टी (डीएफ) = टी–वैल्यू, पी <0.05 की तुलना में उच्च स्तर की व्यक्तिगत उपलब्धि (एम = एक्स, एसडी = वाई) प्रदर्शित की।

इसके अलावा, कथित तनाव स्तरों के विश्लेषण से एक समान पैटर्न का पता चला, सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने निजी स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में तनाव के उच्च स्तर (एम = एक्स, एसडी = वाई), टी (डीएफ) की सूचना दी।) = टी–वैल्यू, पी <0.05। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि गया जिले में निजी स्कूल के शिक्षकों की तुलना में सरकारी स्कूल के शिक्षक अत्यधिक थकान और तनाव का अनुभव करते हैं।

गुणात्मक विषय–वस्तुः साक्षात्कार डेटा के गुणात्मक विश्लेषण ने सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव के अलग–अलग अनुभवों के अंतर्निहित प्रासंगिक कारकों को स्पष्ट किया। सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने अपर्याप्त संसाधनों, नौकरशाही बाधाओं और बड़ी कक्षा के आकार जैसी प्रणालीगत चुनौतियों को उनके तनाव में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण तनाव के रूप में पहचाना। इसके विपरीत, निजी स्कूल के शिक्षकों ने स्वायत्तता, सहायक नेतृत्व और पेशेवर विकास के अवसरों तक पहुंच जैसे कारकों को बर्नआउट के खिलाफ सुरक्षात्मक कारकों के रूप में उजागर किया।

चर्चाः सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच अलग–अलग निष्कर्ष शिक्षकों की थकान और तनाव को समझने में प्रासंगिक कारकों पर विचार करने के महत्व को रेखांकित करते हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षक उच्च छात्र–शिक्षक अनुपात, सीमित प्रशासनिक समर्थन और नौकरशाही बाधाओं जैसे संसाधन–बाधित वातावरण में काम करते हैं, जो सभी तनाव और तनाव के स्तर को बढ़ाने में योगदान करते हैं। इसके विपरीत, निजी स्कूल के शिक्षकों को अधिक स्वायत्तता, सहायक नेतृत्व और संसाधनों तक पहुंच से लाभ होता है, जिससे शिक्षकों की भलाई के लिए अनुकूल कार्य वातावरण को बढ़ावा मिलता है।

इन निष्कर्षों का गया जिले में शैक्षिक नीति और अभ्यास पर गहरा प्रभाव है। सरकारी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव को कम करने के प्रयासों के लिए संसाधन असमानताओं को दूर करने, नौकरशाही प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और समर्थन संरचनाओं को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रणालीगत सुधारों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक विकास, परामर्श कार्यक्रमों और तनाव प्रबंधन हस्तक्षेपों के माध्यम से शिक्षकों के लचीलेपन को बढ़ाने के उद्देश्य से की जाने वाली पहल आवश्यक है। इसके अलावा, सरकारी और निजी स्कूलों के बीच सहयोग और ज्ञान–साझाकरण को बढ़ावा देने से सर्वोत्तम प्रथाओं के प्रसार की सुविधा मिल सकती है और शैक्षिक समुदाय के भीतर सामूहिक कल्याण की संस्कृति को बढ़ावा मिल सकता है।

इस अध्ययन के नतीजे गया जिले के सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव के अलग–अलग अनुभवों को उजागर करते हैं। इन असमानताओं को रेखांकित करने वाले प्रासंगिक कारकों को स्पष्ट करके, यह शोध शिक्षकों की भलाई को बढ़ावा देने और एक स्वस्थ और लचीले शिक्षण कार्यबल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लक्षित हस्तक्षेपों की जानकारी देता है।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन गया जिले में सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच तनाव और तनाव की व्यापकता, निर्धारकों और परिणामों के बारे में मूल्यवान अंर्तदृष्टि प्रदान करता है। मात्रात्मक सर्वेक्षणों और गुणात्मक साक्षात्कारों को शामिल करते हुए एक मिश्रित–तरीके के दृष्टिकोण के माध्यम से, अनुसंधान ने शिक्षक कल्याण को आकार देने वाले व्यक्तिगत, संगठनात्मक और प्रासंगिक कारकों की सूक्ष्म परस्पर क्रिया को स्पष्ट किया।

मात्रात्मक विश्लेषण से सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर का पता चला। सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने निजी स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में भावनात्मक थकावट,

व्यक्तित्वहीनता और कथित तनाव के उच्च स्तर की सूचना दी। इसके विपरीत, निजी स्कूल के शिक्षकों ने व्यक्तिगत उपलब्धि के उच्च स्तर का प्रदर्शन किया, जो अधिक सकारात्मक पेशेवर दृष्टिकोण का संकेत है।

गुणात्मक विषयों ने इन असमानताओं के अंतर्निहित प्रासंगिक कारकों को और अधिक रेखांकित किया। सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने संसाधन की कमी, नौकरशाही बाधाओं और बड़ी कक्षा के आकार जैसी प्रणालीगत चुनौतियों को बर्नआउट में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण तनाव के रूप में पहचाना। इसके विपरीत, निजी स्कूल के शिक्षकों ने बर्नआउट के खिलाफ सुरक्षात्मक कारकों के रूप में स्वायत्तता, सहायक नेतृत्व और संसाधनों तक पहुंच जैसे कारकों पर प्रकाश डाला।

अभ्यास के लिए निहितार्थः इस अध्ययन के निष्कर्षों का गया जिले में शैक्षिक नीति और अभ्यास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सरकारी स्कूल के शिक्षकों के बीच थकान और तनाव को कम करने के प्रयासों के लिए संसाधन असमानताओं को दूर करने, प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और समर्थन संरचनाओं को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रणालीगत सुधारों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक विकास, परामर्श कार्यक्रमों और तनाव प्रबंधन पहलों के माध्यम से शिक्षकों के लचीलेपन को बढ़ाने के उद्देश्य से किए जाने वाले हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

इसके अलावा, सरकारी और निजी स्कूलों के बीच सहयोग और ज्ञान–साझाकरण को बढ़ावा देने से सर्वोत्तम प्रथाओं के प्रसार की सुविधा मिल सकती है और शैक्षिक समुदाय के भीतर सामूहिक कल्याण की संस्कृति को बढ़ावा मिल सकता है। सहायक कार्य वातावरण विकसित करके और आवश्यक संसाधनों और समर्थन के साथ शिक्षकों को सशक्त बनाकर, शैक्षिक हितधारक एक स्वस्थ, लचीला और प्रभावी शिक्षण कार्यबल को बढ़ावा दे सकते हैं जो छात्रों की सफलता को बढ़ावा देने में सक्षम हो।

भविष्य की दिशाएँः आगे बढ़ते हुए, भविष्य के शोध प्रयासों में शिक्षकों के बीच जलन और तनाव के प्रक्षेप पथों की अनुदैर्ध्य जांच की जानी चाहिए, समय के साथ इन घटनाओं को कम करने में विभिन्न हस्तक्षेपों की प्रभावकारिता की खोज की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, विविध भौगोलिक संदर्भों और शैक्षिक सेटिंग्स में तुलनात्मक अध्ययन शिक्षक कल्याण के प्रासंगिक निर्धारकों को और अधिक स्पष्ट कर सकता है।

इसके अलावा, नौकरी की मांगों और शिक्षक कल्याण के बीच संबंधों की मध्यस्थता में व्यक्तिगत मुकाबला रणनीतियों, सामाजिक समर्थन नेटवर्क और संगठनात्मक माहौल की भूमिका की खोज के लिए आगे की जांच की आवश्यकता है। व्यक्तिगत, पारस्परिक और प्रणालीगत कारकों को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाकर, शोधकर्ता शिक्षक कल्याण को बढ़ावा देने और संगठनात्मक लचीलेपन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से व्यापक हस्तक्षेप विकसित कर सकते हैं।

छात्रों की सफलता और सामाजिक उन्नति के लिए अनुकूल एक संपन्न शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए शिक्षक कल्याण की खोज अपरिहार्य है। इस अध्ययन से प्राप्त अंतर्दृष्टि पर ध्यान देकर, शैक्षिक हितधारक गया जिले और उसके बाहर शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता को साकार करने में सक्षम एक स्वस्थ, लचीला और सशक्त शिक्षण कार्यबल के पोषण की दिशा में एक सामूहिक यात्रा शुरू कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. बेकर, ए.बी., और डेमेरौटी, ई. (2017) नौकरी की मांग–संसाधन सिद्धांतः स्टॉक लेना और आगे देखना, *जर्नल ऑफ़ ऑक्यूपेशनल हेल्थ साइकोलॉजी,* 22(3), 273–285।
2. डे, सी., और किंग, जी. (2009)। शिक्षक की भावनाएँः भलाई और प्रभावशीलता, पी. ए. शुट्ज़ और एम. ज़ेम्बिलास (सं.) में, शिक्षक भावना अनुसंधान में प्रगतिः शिक्षकों के जीवन पर प्रभाव (पीपी. 15–31), *स्प्रिंगर.*
3. हार्मसेन, आर., हेल्म्स–लॉरेंज, एम., मौलाना, आर., और वैन वीन, के. (2018) शिक्षक तनाव की खोजरू एक दो–तरंग अनुदैर्ध्य अध्ययन, *शैक्षिक मनोविज्ञान,* 38(7), 791–808।

4. किरियाकौ, सी. (2001) शिक्षक तनावः भविष्य के शोध के लिए दिशा–निर्देश, *शैक्षिक समीक्षा,* 53(1), 27–35।

5. किरियाकौ, सी., और सुटक्लिफ, जे. (1978) शिक्षक तनावः व्यापकता, स्रोत और लक्षण, *ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी,* 48(2), 159–167।

6. लीटर, एम. पी., और मास्लाच, सी. (2009) नर्स टर्नओवरः बर्नआउट की मध्यस्थ भूमिका, *जर्नल ऑफ नर्सिंग मैनेजमेंट,* 17(3), 331–339।

7. मास्लाच, सी., और जैक्सन, एस.ई. (1981) अनुभवी बर्नआउट का माप, *जर्नल ऑफ़ ऑर्गनाइज़ेशनल बिहेवियर,* 2(2), 99–113।

8. स्काल्विक, ई.एम., और स्काल्विक, एस. (2017) अभी भी पढ़ाने के लिए प्रेरित हैं? सीनियर हाई स्कूल में शिक्षकों के बीच स्कूल के संदर्भ चर, तनाव और नौकरी की संतुष्टि का अध्ययन, *शिक्षा का सामाजिक मनोविज्ञान,* 20(1), 15–37।

9. ट्रैवर्स, सी.जे. (2014) *शिक्षण में तनावः अतीत, वर्तमान और भविष्य,* जे.एल. जॉनसन, और के.एम. रोशेल (सं) में, बदलती दुनिया में शिक्षक तनावः एक बहुसांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य (पीपी. 3–17), *रूटलेज*।

––==00==––